निजी प्रसार हेतु

Š

हिंदी विश्व

प्रवेशांक

वर्ष–1 अंक–1 वर्धा : सितंबर–अक्टूबर, 2014 महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की द्विमासिक समाचार पत्रिका

उपलब्धि के नए मानदंड स्थापित करेंगे – प्रो. गिरीश्वर मिश्र

कुलपति-संदेश

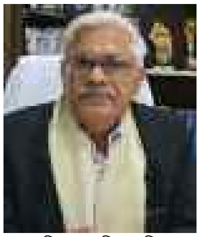

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय पूज्य बापू के सपनों को मूर्त आकार देने का एक प्रयास है। उनकी 'स्वराज' की अवधारणा देश की भाषा में अध्ययन और चिंतन–मनन की परंपरा को स्थापित और प्रोत्साहित करती है परंतु लंबी औपनिवेशिक पृष्ठभूमि में जन्मे, पले और बढ़े भारत के आधुनिक विश्वविद्यालयों के लिए यह बड़ा स्वाभाविक था कि वे उसी औपनिवेशिक मानसिकता के अनुरूप ही आगे बढ़ते रहें और यही हुआ भी। स्वाधीन होने पर भी देश के लिए इस आग्रह से मुक्त हो पाना बड़ा कठिन सिद्ध हुआ और अंग्रेज़ी ही ज्ञान–विज्ञान की भाषा बनी रही। इससे उबरने की दिशा में जो प्रयास हुए वे भी बड़े सीमित हुए। इस पृष्ठभूमि में सरकार द्वारा इस हिंदी केंद्रित विश्वविद्यालय की संकल्पना एक बड़ी उपलब्धि थी। हिंदी के शुभेच्छुओं के सतत प्रयास से नागपुर में 1975 में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित प्रस्ताव और व्यापक समर्थन के उपरान्त भारतीय संसद ने इसे स्वीकारा। वर्ष 1997 में अस्तित्व में आने के बाद से यह अकेला 'अंतरराष्ट्रीय' केन्द्रीय विश्वविद्यालय भारत में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक वैकल्पिक शिक्षा संस्थान के रूप में अपनी पहचान बनाने के लिए कटिबद्ध है। आज विश्वविद्यालय की गतिविधियाँ बहुमुखी और बहुआयामी हो चली हैं।विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारी पाठ्यक्रम, देश की आवश्यकता के अनुसार व्यापक युवावर्ग को कौशलयुक्त बनाने के लिए अनेक पाठ्यक्रम, तैयार कर रहा है। वह मानविकी और समाज विज्ञानों में अध्ययन की अच्छी परम्परा के साथ तकनीक से भी जुड़ने के लिए यत्नशील है। हमें आशा है कि यह बुलेटिन बाहर की दुनिया के साथ विश्वविद्यालय का संवाद करने में मददगार साबित होगा। संपादक तथा उनकी टीम को मेरी हार्दिक बधाइयाँ।

प्रो. कपिल कपूर नए कुलाधिपति आज वर्धा आगमन पर होगा भव्य स्वागत

विश्वविद्यालय के नवनियुक्त कुलाधिपति प्रो. कपिल कपूर का स्वागत विश्वविद्यालय परिसर में 03 नवंबर को हबीब तनवीर सभागार में प्रातः 10 बजे आयोजित है। प्रो. कपूर जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के रेक्टर, अंग्रेज़ी तथा संस्कृत के प्रोफेसर रहे है। वे भाषाविज्ञान तथा काव्यशास्त्र के विख्यात विद्वान है। वे एनसाइक्लोपीडिया ऑफ हिंदूइजम के प्रधान संपादक रहे हैं।

प्रवेश प्रक्रिया ऑनलाइन

विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक सत्र 2014–15 से सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु ऑनलाइन आवेदन करने की सुविधा प्रदान की है। इस सुविधा के अंतर्गत देश–विदेश के विद्यार्थियों ने विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु ऑनलाइन प्रक्रिया को अपनाया।

सदिच्छा हमारी....

संपादकीय

समय बदल रहा है और समय के सापेक्ष सामाजिक बदलाव अवश्यंभावी है। सामाजिक बदलाव, नवाचार की दिशा क्या हो, उसका नियंत्रण किसके हाथ में हो? यह जवाब तलाशने का समय नहीं है वरन आगे बढ़कर जवाब बन जाने का समय है। तकनीकी विकास और सूचना विस्फोटजन्य अत्याधुनिकता से विकसित जीवन पद्धति की जटिलता और विभीषिका से समूचा विश्व व समाज आक्रांत है। समूची दुनिया बदलाव के मार्ग की जरूरत को शिद्दत से महसूस कर रही है। ऐसे में हमारी भूमिका क्या हो, तत्काल सुनिश्चित कर लेने की महती आवश्यकता है। विश्वविद्यालयों और शिक्षाजगत से जुड़े विद्वतजन की ऐतिहासिक भूमिका और नव निर्माण में उनकी उपयोगिता स्वयंसिद्ध है। ऐसे में, जब 'अच्छे दिन आ गए' की घोषणा हो चुकी हो, हमें सचेत हो जाने की जरूरत है। अपनी महत्ता और उपयोगिता के समक्ष तनकर खड़े यक्षप्रश्न को निरुत्तर कर देने की जरूरत है। शिक्षा और शोध के माध्यम से, विचार और व्यवहार के माध्यम से, कर्म और नेतृत्व के माध्यम से हम सामाजिक बदलाव के संवाहक बनें। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना महात्मा गांधी और आचार्य विनोबा की कर्म स्थली वर्धा में की गई है। यह महज संयोग नहीं, सुविचारित है। 'हिंदी विश्व' समाचार पत्रिका का प्रकाशन भी उद्देश्यपूर्ण और लक्ष्य सम्पन्न है। यह विश्वविद्यालय अपनी अकादमिक गतिविधियों, बौद्धिक विमर्शों और सार्थक बदलाव की दिशा में किए गए अपने हस्तक्षेप से हम सभी को प्रेरित कर सकें, हम सभी में स्वबोध उत्पन्न कर सकें, ऐसी हमारी सदिच्छा है। उम्मीद है आप हमारी सदिच्छा के पूर्तिवाहक बनेंगे, हमें अपनी जिम्मेदारी के प्रति लगातार सचेत करते रहेंगे।

प्रो. अनिल के. राय 'अंकित'

आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ समिति की बैठक

बदलते परिदृश्य में विश्वविद्यालय को निरंतर सुधार की लड़ाई लड़नी चाहिए और गुणवत्ता एक आंदोलन बनना चाहिए। विश्वविद्यालय को विद्यार्थी केंद्रित ज्ञान पद्धति का विकास करना चाहिए। उक्त उद्‌बोधन दिल्ली विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय संबंध के डीन प्रो. आनंद प्रकाश ने दिया। वे विश्वविद्यालय में आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ समिति (IQAC) की पहली बैठक को संबोधित कर रहे थे। विश्वविद्यालय के भाषा विद्यापीठ के सभागार में बुधवार दि. 18 जून को आयोजित बैठक की अध्यक्षता कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की। बैठक में महात्मा गांधी ग्रामीण औद्योगीकरण संस्थान, वर्धा के निदेशक प्रो. प्रफुल्ल काले, यशवंत महाविद्यालय, वर्धा में विधि विभाग के प्रमुख प्रो. अशोक पावडे सदस्य के रूप में तथा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के प्रधानमंत्री प्रो. अनंतराम त्रिपाठी विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में उपस्थित रहे।

संरक्षक
प्रो. गिरीश्वर मिश्र, कुलपति
सलाहकार
प्रो. चित्तरंजन मिश्र, प्रतिकुलपति
प्रधान संपादक
प्रो. अनिल के. राय 'अंकित'
संपादक मंडल
डॉ. अनिल दुबे
डॉ. शंभू जोशी
बी. एस. मिरगे
राजेश अरोड़ा
आकल्पन
राजेश आगरकर
प्रकाशक एवं मुद्रक
राजेश कुमार यादव, प्रभारी : प्रकाशन अनुभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
गांधी हिल्स, वर्धा – 442 005
संपर्क : 07152–230907
वेबसाइट : www.hindivishwa.org
ई–मेल : samachar@hindivishwa.org

सौंदर्यशास्त्र को हिंदुस्तानी नज़रिए से देखें – प्रो. नामवर सिंह

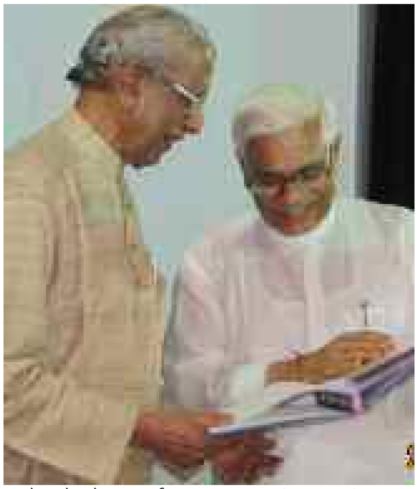

प्रख्यात आलोचक प्रो. नामवर सिंह ने कहा कि सौंदर्यशास्त्र की परिभाषा करने के संदर्भ में भारतीय काव्य शास्त्रीय चिंतन को आधार बनाना आवश्यक है। इस चिंतन के आधार पर ही सौंदर्यशास्त्र संपूर्णता में परिभाषित हो सकता है। प्रो. सिंह महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के सृजन विद्यापीठ में **'भारतीय और पाश्चात्य सौंदर्यशास्त्र का स्वरूप'** विषय पर व्याख्यान दे रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की। समारोह में कुलपति ने विश्वविद्यालय के कुलाधिपति रहे प्रो. नामवर सिंह को प्रशस्ति पत्र एवं एलबम भेंट कर सम्मानित किया। प्रो. नामवर सिंह ने कहा कि सौंदर्यशास्त्र को जीवन से जोड़कर देखने की जरूरत है। ऐसा करके ही हम सौंदर्यशास्त्र संबंधी चिंतन में आए गतिरोध को दूर कर सकते हैं।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा, सौंदर्यशास्त्र संवेदना और आस्वादन पर विचार करने वाला विषय है। जटिल जीवन में सौंदर्यशास्त्र की परिधि व्यापक होनी चाहिए। सृजन विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. सुरेश शर्मा ने कहा कि प्रो. नामवर सिंह ने पिछले 65 वर्षों में सौंदर्यशास्त्र को परिभाषित करने के लिए लगातार प्रयास किए हैं। विदित हो कि भारतीय एवं पाश्चात्य कला एवं सौंदर्यशास्त्र का डिप्लोमा पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने अनुमोदित कर उसे संचालित करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की थी। इसके सह–संयोजक डॉ. शिवप्रिय है।

अनुवाद पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

साहित्य अकादमी तथा महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में दि. 03 से 05 नवंबर 2014 तक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। इस संगोष्ठी में 'दक्षिण भारत की भाषाएँ और हिंदी में परस्पर साहित्यिक अनुवाद : स्थिति, चुनौतियाँ एवं मूल्यांकन' विषय पर चर्चा की जाएगी। संगोष्ठी का उद्‌घाटन दि. 03 नवंबर को पूर्वाह्न 11.30 बजे होगा। साहित्य अकादमी के उपसचिव ब्रजेन्द्र त्रिपाठी स्वागत करेंगे तथा आरंभिक वक्तव्य सूर्यप्रसाद दीक्षित देंगे। अकादमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथप्रसाद तिवारी समारोह के मुख्य अतिथि होंगे। समारोह का उद्‌घाटन कुलाधिपति प्रो. कपिल कपूर करेंगे। बीज व्याख्यान प्रो. जी. गोपीनाथन देंगे। संगोष्ठी में प्रो. वी.डी. कृष्णन नंपियार, प्रो. सिद्धलिंग पट्टनशेट्टी, प्रो. पद्‌मावती, प्रो. कृष्णकुमार गोस्वामी, प्रो. सुनिता मंजनबैल, प्रो. नागलक्ष्मी, प्रो. सर्राजु, प्रो. बालशौरि रेड्डी, प्रो. ललिताम्बा वी.वै., प्रो. सुधांशु चतुर्वेदी, प्रो. एच. बालसुब्रह्मण्यम, प्रो. वै. वेंकटरमण, प्रो. भालचंद्र जयशेट्टी, प्रो. मोहनन वी.टी.वी., प्रो. तेजस्वी कट्टीमणि, प्रो. टी.आर. भट्ट, प्रो. तंकमणि अम्मा, प्रो. एन. सुंदरम, प्रो. प्रभाशंकर प्रेमी उपस्थित रहेंगे। संगोष्ठी की संयोजक डॉ. अन्नपूर्णा सी. तथा समन्वयक डॉ. अनवर अहमद सिद्दीक़ी है।

सीसीएमएस ने तैयार किए अनेक शैक्षिक वीडियो

संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र (सी.सी.एम.एस) अपने विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं शिक्षकों के सहयोग से अनेक शैक्षिक श्रव्य–दृश्य कार्यक्रमों के निर्माण की दिशा में सक्रिय है। पिछले दिनों कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र के शोध–प्रविधि संबंधी व्याख्यानों पर केंद्रित चार वीडियो फिल्म, वरिष्ठ कथाकार एवं पूर्व आवासीय लेखक श्री से.रा. यात्री से बातचीत पर आधारित कार्यक्रम, वर्तमान आवासीय लेखक डॉ. अरुणेश नीरन, श्री मदन सोनी एवं वरिष्ठ कवि श्री अरुण कमल के साथ परिचर्चा पर आधारित कार्यक्रम, मीडिया चिंतक श्री रामशरण जोशी के साथ समय–सापेक्ष के अंतर्गत बातचीत पर आधारित कार्यक्रम तथा अन्य अनेक समसामायिक मुद्दों पर आधारित कार्यक्रमों के निर्माण किया गया।

शैक्षिक भ्रमण का आयोजन

संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र द्वारा पहले सेमेस्टर के विद्यार्थियों के व्यावहारिक ज्ञान हेतु 5 नवंबर को नागपुर स्थित विभिन्न मीडिया संस्थानों में शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया जाएगा। पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन तथा रेडियो, टेलीविज़न कार्यक्रमों के निर्माण एवं उसके प्रसारण की व्यावहारिक जानकारी के लिए आयोजित इस कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थी 'दैनिक भास्कर', 'लोकमत समाचार' के कार्यालयों तथा आकाशवाणी और दूरदर्शन केंद्र, नागपुर के विभिन्न संबंधित प्रभागों से मिलकर वहाँ की गतिविधियों की जानकारी लेंगे।

लोकतंत्र हिंदी के बिना चल नहीं सकता और यदि चलता है तो झूठा है – जैनेन्द्र कुमार

वाद–विवाद प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय को पुरस्कार

महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस, सेवाग्राम के स्थापना–दिवस एवं संस्थापिका डॉ. सुशीला नायर की स्मृति में 'स्त्रियों की सामाजिक प्रतिष्ठा घट रही है' विषय पर आयोजित वाद–विवाद प्रतियोगिता में विवि को पुरस्कृत किया गया। प्रतियोगिता के निर्णायक में प्रसिद्ध सामाजिक तथा महिला अधिकार कार्यकर्ता नूतन मालवी, जिला सत्र न्यायालय में सरकारी अधिवक्ता अर्चना वानखेडे एवं गो. से. वाणिज्य महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अब्दुल बारी का समावेश था। महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान के समूह में अमित सिन्हा और राधिका को विजेता घोषित किया गया एवं महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के समूह में कुलदीप पांडे और अंजलि राजपूत को उपविजेता घोषित किया गया। कस्तूरबा हेल्थ सोसायटी के सचिव डॉ. बी. एस. गर्ग, संयोजिका अनुपमा गुप्ता, डॉ. अनवर अहमद सिद्दीक़ी एवं निर्णायक मंडल द्वारा उपविजेताओं को रनर ट्रॉफी प्रदान कर सम्मानित किया गया। विश्वविद्यालय के अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ के प्रतिभागी कुलदीप पांडे को विषय के पक्ष में अपने विचार रखने हेतु तथा महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान की प्रतिभागी राधिका को विषय के विपक्ष में अपने विचार रखने हेतु उत्कृष्ट वक्ता के रूप में पुरस्कृत किया गया।

शोध–प्रविधि पर विशेष व्याख्यान

कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र द्वारा शिक्षकों एवं शोधार्थियों के लिए शोध–प्रविधि के विभिन्न आयामों पर विशेष व्याख्यान की प्रस्तुति पिछले दो माह से निरंतर जारी है। प्रो. मिश्र ने शोध–प्रविधि के मूल आधार, आधारीय सिद्धांत, नृवैज्ञानिक अध्ययन तथा आख्यान विश्लेषण जैसी महत्वपूर्ण शोध प्रविधियों पर अपने व्याख्यान दिए। व्याख्यानों में प्रो. मिश्र ने शोधार्थियों एवं शिक्षकों के शोध संबंधित प्रश्नों एवं आशंकाओं का भी समाधान किया। उनके व्याख्यान शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए न सिर्फ ज्ञानवर्धन बल्कि प्रेरणा देने का कार्य भी कर रहे है।

सर्वोदय के साथ ग्राम स्वराज जरूरी – डॉ. कमल टावरी

भारत सरकार के पूर्व सचिव एवं सेवानिवृत्त आई. ए.एस. अधिकारी डॉ. कमल टावरी ने विश्वविद्यालय के मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि भारत के गांवों के विकास के लिए वैकल्पिक मॉडल तलाशना अनिवार्य है। इसके लिए अनुदानविहीन योजना पर कार्य करके सर्वोदय के साथ ग्राम स्वराज के गांधी जी के सपनों को साकार किया जा सकता है। विश्वविद्यालय द्वारा संचालित समाज कार्य तथा जनसंचार पाठ्‌यक्रम के विद्यार्थियों को आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि हमें गांव के विकास के लिए विस्तृत योजना तैयार कर भारत सरकार के साथ संपर्क स्थापित करना चाहिए।

विश्वविद्यालय फेसबुक पर

सोशल मीडिया को अपनी गतिविधियों को प्रसारित एवं प्रचारित करने के लिए विश्वविद्यालय ने फेसबुक पर अपना खाता शुरु किया है। इसे MGAHV Wardha के नाम से देखा जा सकता है।

जनसंपर्क अधिकारियों की कार्यशाला

सोशल मीडिया का लोकतंत्रीकरण हुआ है। उत्तर आधुनिक समाज में इस मीडिया ने अपना स्थान अव्वल कर लिया है। आधुनिक तकनीकी का इस्तेमाल कर सोशल मीडिया का सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक उपयोग बढ़ाकर सूचनाओं के आदान–प्रदान की गति तेज करने की आवश्यकता है। उक्त विचार वर्धा के जिलाधिकारी एन. नवीन सोना ने व्यक्त किया। वे विश्वविद्यालय में जनसंपर्क अधिकारियों के लिए 'सरकारी कार्य में सोशल मीडिया का उपयोग' विषय पर 10 एवं 11 सितंबर को आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में बतौर उद्घाटक बोल रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता दैनिक भास्कर के समूह संपादक श्री प्रकाश दुबे ने की।

केंद्रीय विद्यालय की अनुमति

विश्वविद्यालय परिसर में केंद्रीय विद्यालय शुरु करने की अनुमति केंद्रीय विद्यालय संगठन ने प्रदान की है। अगले शैक्षणिक वर्ष से केंद्रीय विद्यालय अस्तित्व में आयेगा।

दूसरा अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह
सिनेमा का सामाजिक दौर खत्म हुआ – ओमपुरी

भारतीय सिनेमा के दौर में सन 1970 तक सामाजिक सिनेमा का दौर चला था। सिनेमा एक ताकतवर माध्यम है परंतु आज के समय में इस माध्यम का कुछ लोग दुरूपयोग कर रहे हैं। आज मनोरंजन फिल्में ज्यादा बन रही है और भारतीय सिनेमा में सामाजिक सिनेमा का दौर चला गया है। उक्त मत जाने–माने अभिनेता ओमपुरी ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय के नाट्यकला एवं फिल्म अध्ययन विभाग द्वारा दिनांक 29, 30 सितंबर तथा 01 अक्टूबर को आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह के उद्घाटन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की। इस अवसर पर सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले फिल्म प्रभाग के महानिदेशक वी. एस. कुंडू, एफ. टी.आई.आई. पुणे के सिनेमेटोग्राफी के प्रोफेसर भरत नेरकर तथा विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र मंचासीन थे। अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में मशहूर अभिनेता ओमपुरी को कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र के द्वारा 'सत्यजित राय सम्मान' से अलंकृत किया गया। ओमपुरी ने कहा कि आज की फिल्मों में आईटम नंबर हावी हो गए है। एक दौर था जब सिनेमा के माध्यम से सामाजिकदृश्यों को अहमियत दी जाती थी। तमस और भारत एक खोज इसके उदाहरण दिए जा सकते हैं। उन्होंने कहा कि सिनेमा के लिए एक चैनल ऐसा होना चाहिए जिसमें सामाजिक सरोकार से जुड़ी फिल्में ही दिखाई जाए। अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि सिनेमा जिंदगी का अहम हिस्सा बना हुआ है। ओमपुरी हर तरह के किरदार को जीने वाले अभिनेता है। वे अभिनय में डूब कर अपनी कला को अंजाम देते हैं। कुलपति ने कहा कि एक ऐसे कलाकार को सत्याजित राय सम्मान प्रदान करने से विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ा है।

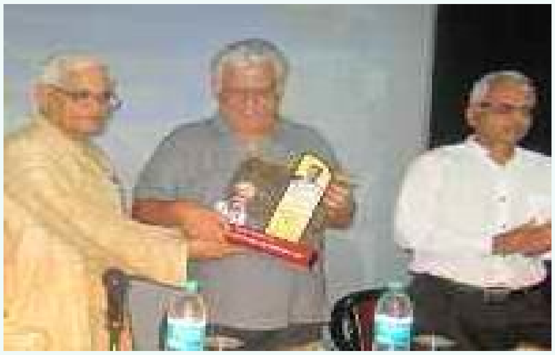

दिखाई गई 22 पुरस्कृत फिल्में

मास्को में अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन

विदेश मंत्रालय, भारत सरकार की पहल पर अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मलेन का आयोजन जवाहर लाल नेहरु सांस्कृतिक केंद्र, भारतीय दूतावास मास्को तथा राजकीय मानविकी विश्वविद्यालय, मास्को के संयुक्त तत्वावधान में 13 से 15 अक्टूबर को सम्पन्न हुआ। तेरह अक्टूबर को विश्वविद्यालय के विशाल सभागार में प्रातःकाल सम्मेलन का आरंभ हुआ। उद्घाटन कार्यक्रम में भारतीय राजदूत श्री राघवन, उप राजदूत श्री संदीप आर्य, रूसी अधिकारी, मानविकी विश्वविद्यालय के कुलपति, अनेक हिंदी अध्येता, विद्यार्थी, अध्यापक आदि बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। उद्घाटन सत्र के अवसर पर 'सहयात्रा' शीर्षक स्मारिका, हिंदी के शीर्ष कवि श्री कुंवर नारायण की कविताओं का रूसी अनुवाद, एक हिंदी काव्य पुस्तक तथा प्रख्यात संगीतकार खय्याम पर फिल्म की सीडी का विमोचन किया गया। म.गां.अ.हि.वि.वि. के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने हिंदी के स्वरूप, विकास और उसके अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य पर प्रकाश डाला। भारत के विदेश मंत्रालय में उपसचिव श्रीमती सुनीति शर्मा ने भारत सरकार द्वारा हिंदी के संवर्धन हेतु किए जा रहे विविध प्रयासों पर प्रकाश डाला। प्रतिभागियों ने इस तरह के आयोजन को प्रासंगिक बताया और विचार हेतु कई प्रश्नों को उठाया। संचालन श्री अनिल जनविजय ने किया। इसके उपरांत तीन दिनों में छह अकादमिक सत्रों में अनेक विषयों पर विचार विमर्श संपन्न हुआ। भारत की धरती से बाहर भारत का यह अनुष्ठान अद्भुत और संतोषदायी था। इसमें भारत, रूस और यूरेशिया के आर्मीनिया, ताजिकिस्तान, उज्बेकिस्तान, कजाकिस्तान आदि देशों से पधारे शताधिक हिंदी अध्येता सम्मिलित हुए। सम्मलेन में हुई चर्चा में युवा, प्रौढ़ और वृद्ध हर आयुवर्ग के कई पीढी के विद्वान शामिल हुए। प्रो. सुरेश शर्मा द्वारा प्रख्यात संगीतकार खय्याम पर बनाई गई फिल्म दिखाई गई जिसने सबका मन मोह लिया। विदेश मंत्रालय, भारत सरकार में उपसचिव श्रीमती सुनीति शर्मा ने सारी व्यवस्था अपनी निगरानी में की और मास्को में यह कठिन दायित्व श्री संजय बेदी ने बड़े मनोयोग से निभाया जो इस समय भारतीय दूतावास के अंतर्गत संचालित जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र के कार्यकारी निदेशक हैं।

मास्को में हो अगला विश्व हिंदी सम्मेलन

मास्को में आयोजित अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन ने सर्वानुमति से यह प्रस्ताव पारित किया है कि 2015 में होने वाला विश्व हिंदी सम्मेलन मास्को में हो।

कुलाधिपति करेंगे भगत सिंह छात्रावास का उद्घाटन

विश्वविद्यालय के नवनिर्मित भगत सिंह छात्रावास का उद्घाटन 3 नवंबर को कुलाधिपति प्रो. कपिल कपूर द्वारा किया जाएगा। यह समारोह विश्वविद्यालय के उत्तरी परिसर में प्रातः 9.30 बजे आयोजित है। समारोह की अध्यक्षता कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र करेंगे। विश्वविद्यालय का यह चौथा छात्रावास होगा। जिसमें शोधार्थी एवं छात्रों के लिए रहने की सुविधाएँ हैं।

डॉ. अर्चना पाठ्या को पोस्ट डॉक्टरल फैलोशिप

विश्वविद्यालय की छात्रा डॉ. अर्चना पाठ्या का यू.जी.सी. की पोस्ट डॉक्टरल फैलोशिप हेतु चयन हुआ है। उनके शोध का विषय 'इक्कीसवीं सदी में शैक्षणिक चुनौतियाँ : समस्याएँ एवं संभावनाएँ' है।

विश्वविद्यालय में स्वच्छ भारत अभियान

भारत सरकार के 'स्वच्छ भारत अभियान' के तहत राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में 'स्वच्छ भारत अभियान' चलाया गया। विश्वविद्यालय परिसर में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र तथा प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने खुद झाड़ू लगाकर इस महत्वाकांक्षी अभियान का प्रारंभ किया। विश्वविद्यालय के सभी भवनों और परिसर के महत्वपूर्ण स्थानों पर अध्यापक, अधिकारी, कर्मी तथा छात्र–छात्राओं ने इस अभियान में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया और परिसर को स्वच्छ रखने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दर्शाई। सुबह 7 बजे से यह अभियान चलाया गया। परिसर में जमा कूड़ा–कचरा, घास और मिट्टी को हटाकर सफाई की गई तथा परिसर स्थित पौधों से सटी घास को काट कर पौधों को पानी डाला गया। परिसर को स्वच्छ, साफ सुथरा और हराभरा रखने की दिशा में की गई इस पहल को नियमित रूप से जारी रखने का निर्णय विश्वविद्यालय ने लिया है।

जीवन के सवालों का जवाब गांधी विचार में

जीवन के सारे सवालों का उत्तर गांधी विचार में निहित है। हम जीवन में छोटी–छोटी बातों पर अमल करे तो भी गांधी विचार को अपना सकते हैं। सब कुछ के साथ भी गांधी को जिया जा सकता है। उक्त विचार अखिल भारतीय नई तालीम समिति, सेवाग्राम के अध्यक्ष डॉ. सुगन बरंठ ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय में 02 अक्टूबर को गांधी की 145 वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में बतौर मुख्य वक्ता बोल रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की।

गांधी शोध वृत्ति प्रारंभ

महात्मा गांधी के मौलिक/दार्शनिक विचारों ने न केवल समाज, बल्कि मानव मात्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। विश्वविद्यालय गांधी जी के मौलिक/दार्शनिक विचारों को अपनी कार्यशैली में भी आत्मसात करने का प्रयास कर रहा है। इसी प्रयास के तहत विश्वविद्यालय ने प्रारंभिक स्तर पर गांधी दर्शन के क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से लेखन करने वाले लेखकों/चिंतकों को गांधी शोधवृत्ति दिए जाने की योजना बनाई है। दो वर्ष की अवधि की इस योजना के लिए शोधवृत्ति के रूप में दो लाख रूपये प्रदान किए जाएंगे।

शोध प्रोत्साहन के लिए विश्वविद्यालय की अनूठी पहल

शिक्षकों को स्वतंत्र रूप से शोधकार्य करने के लिए विश्वविद्यालय ने प्रोत्साहन स्वरूप उन्हें एकमुश्त अनुदान प्रदान करने का निर्णय लिया है। इस योजना के तहत प्रथम चरण में विश्वविद्यालय में कार्यरत 12 शिक्षकों को चयनित किया गया है। डॉ. डी.एन. प्रसाद, डॉ. रवि कुमार, डॉ. अख़्तर आलम, डॉ. सुप्रिया पाठक, डॉ. प्रीति सागर, डॉ. शोभा पालीवाल, डॉ. शंभू जोशी, डॉ. अमरेंद्र कुमार शर्मा, डॉ. सुरजीत कुमार सिंह, डॉ. धनजी प्रसाद तथा डॉ. अरूण कुमार सिंह को उनके द्वारा प्रस्तावित शोध शीर्षकों पर कार्य करने की अनुमति विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की गई है।

जनसंपर्क अधिकारी बी.एस. मिरगे एवं सहायक प्रोफेसर डॉ. अनवर अहमद सिद्दीक़ी को हिंदी दिवस के अवसर पर राष्ट्रभाषा हिंदी सेवी सम्मान से विभूषित करते हुए केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक प्रो. के. एल. वर्मा।

विकास की आधुनिक अवधारणा हो पूरी – प्रो. देवराज

शिक्षण में सूचना प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग विषय पर कार्यशाला

विकास की आधुनिक अवधारणा की पहुंच जनजातीय क्षेत्र में आसान बनाने के लिए शिक्षा के माध्यम से प्रयास होने चाहिए। सूचना क्रांति के विस्फोट का लाभ उन क्षेत्रों को प्राप्त होने के लिए वहां सूचना, संचार और प्रौद्योगिकी के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए। सूचना की प्रामाणिकता को परख कर शिक्षा में सूचना प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल होना चाहिए। उक्त विचार विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलसचिव प्रो. देवराज ने व्यक्त किए। वे संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र द्वारा 'शिक्षण प्रविधि तथा कक्षा अध्यापन में सूचना एवं प्रौद्योगिकी, आईसीटी का अनुप्रयोग' विषय पर शिक्षकों के लिए दि. 28 जुलाई से 03 अगस्त 2014 तक आयोजित सात दिवसीय कार्यशाला के उद्घाटन के अवसर पर बोल रहे थे। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में वरिष्ठ शिक्षण प्रशिक्षक नवेन्दु महोदय, इंदौर, भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली के पूर्व पाठ्यक्रम निदेशक प्रो. प्रदीप माथुर, वरिष्ठ दृश्य–श्रव्य संचारक, डॉ. किशोर वासवानी, अहमदाबाद, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अनिल कुमार राय मंचासीन थे।

क्षेत्रीय केंद्रों का अकादमिक विस्तार

अकादमिक एवं शोध गतिविधियों को बढ़ाने की दृष्टि से विश्वविद्यालय द्वारा स्थापित दो केंद्रों– इलाहाबाद एवं कोलकाता की अकादमिक गतिविधियों में वर्तमान सत्र से विस्तार किया गया है। इन केंद्रों की स्थापना का मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा को उच्च शिक्षा के माध्यम से उसके प्रसार को स्पष्ट तौर पर अभिव्यक्त करना है। इस दृष्टि से इलाहाबाद केंद्र में वर्तमान सत्र से एम.फिल. हिंदी (तुलनात्मक साहित्य), एम.ए. हिंदी, एम.ए. समाजकार्य, नाट्यकला एवं फिल्म अध्ययन, अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान तथा अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा एवं उर्दू भाषा में डिप्लोमा प्रारंभ किया गया है। क्षेत्रीय केंद्र इलाहाबाद में भारतीय, विदेशी भाषा एवं साहित्य विभाग, हिंदी सह भाषा विभाग स्थापित करने की योजना है। इस केंद्र को विश्वविद्यालय के ऑफ कैम्पस के रूप में विकसित करना प्रस्तावित है। कोलकाता केंद्र में इस शिक्षा सत्र से एम.ए. हिंदी, एम.फिल. हिंदी (तुलनात्मक साहित्य) तथा अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रारंभ किए गए हैं। हिंदी और पूर्वोत्तर की भाषाएँ : परस्पर संबंध पर एम.फिल. स्तरीय तथा पूर्वोत्तर की भाषाओं की स्थिति पर पीएच.डी. स्तरीय पाठ्यक्रम प्रारंभ करने की इस केंद्र की योजना है। कोलकाता केंद्र भविष्य में सार्क देशों के श्रेष्ठ साहित्य का हिंदी में अनुवाद प्रकाशित करने का कार्य करेगा ताकि भविष्य में शोधार्थी हिंदी साहित्य के साथ–साथ उसका तुलनात्मक अध्ययन कर सकें।

चीनी प्रतिनिधि मंडल विश्वविद्यालय में

विश्वविद्यालय में चीन के शनयाड विश्वविद्यालय से आये प्रतिनिधि मंडल का स्वागत कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र की अध्यक्षता में आयोजित एक समारोह में किया गया। इस अवसर पर भाषा विद्यापीठ के कार्यवाहक अधिष्ठाता प्रो. देवराज, विदेशी शिक्षण प्रकोष्ठ के प्रभारी प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल, भाषा विद्यापीठ के पूर्व अधिष्ठाता उमाशंकर उपाध्याय उपस्थित थे। चीन के शनयाड विश्वविद्यालय से तीन सदस्यों का एक प्रतिनिधि मंडल विश्वविद्यालय में आया जिसमें चीन के अंतरराष्ट्रीय शिक्षा महाविद्यालय के अध्यक्ष तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग कार्यालय के उपाध्यक्ष फंग शूएकांग, अंतरराष्ट्रीय शिक्षा महाविद्यालय की उपनिर्देशक सुश्री चीन शूएली और कन्फ्यूसियस संस्थान कार्यालय की अनुवादक सुश्री हू पो शामिल थे। प्रतिनिधि मंडल का स्वागत कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने किया। इस अवसर पर प्रो. मिश्र ने कहा कि भारत और चीन एशिया की दो महान सभ्यता वाले देश हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि शनयाड विश्वविद्यालय के साथ साझा समझौते के माध्यम से हम एशिया की सभ्यताओं को और निकट ला सकेंगे।

बेल्जियम की छात्राओं का स्वागत करते प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र

राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में सरदार पटेल जयंती

भारत सरकार ने सरदार वल्लभभाई पटेल का जन्म दिवस 31 अक्टूबर, 2014 को राष्ट्रीय एकता, अखंडता एवं सुरक्षा के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय में अनेक गतिविधियों का आयोजन किया गया तथा राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा को बनाए रखने से संबंधित शपथ ली गई। गांधी हिल से नज़ीर हाट तक राष्ट्रीय एकता दौड़, पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता, निबंध लेखन प्रतियोगिता, परिचर्चा, पुस्तक प्रदर्शनी, पोस्टर प्रदर्शनी तथा सरदार पटेल पर केंद्रित फिल्म का प्रदर्शन किया गया।

नवनिर्वाचित शिक्षक संघ

विश्वविद्यालय के शिक्षक संघ के चुनाव में सभी पदाधिकारी तथा कार्यकारिणी सदस्य निर्विरोध चुने गए। अध्यक्ष–डॉ. धरवेश कठेरिया, उपाध्यक्ष– संदीप सपकाले, महासचिव–राकेश मिश्र, संयुक्त सचिव शैलेश मरजी कदम तथा अन्य सदस्यों ने शिक्षक दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में शपथ ग्रहण की।

हिंदी हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक व्यवहार में आनेवाली भाषा है – राहुल सांकृत्यायन

हिंदी की साहित्यिक–सांस्कृतिक विरासत

विश्वविद्यालय, वर्धा का प्रकाशन विभाग देश के केंद्रीय विश्वविद्यालयों में अग्रणी प्रकाशन इकाई होने के साथ–साथ राष्ट्रीय महत्व के महत्वपूर्ण विषयों एवं भारत की समृद्ध एवं विविधतापूर्ण सांस्कृतिक और साहित्यिक विरासत की पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का प्रकाशन करता है। विभाग हिंदी की राष्ट्रीय साहित्यिक विरासत को संरक्षित करने तथा राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर उत्कृष्ट एवं कम मूल्य की पाठ्य सामग्री तैयार करने एवं उसके प्रचार–प्रसार करता है। इन महत्वपूर्ण विषयों में सहित्य, कला, इतिहास, संस्कृति, हिंदी के सुप्रसिद्ध साहित्यकारों के श्रेष्ठ साहित्य का प्रकाशन शामिल है। विश्वविद्यालय द्वारा अब तक हिंदी के लगभग दो दर्जन साहित्यकारों की संचयिताएं प्रकाशित की जा चुकी हैं। विश्वविद्याल के 16वें वार्षिक स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर 'वर्धा हिंदी शब्दकोश' का विमोचन किया गया ।

विश्वविद्यालय के प्रकाशन

लोकसंस्कृति से सराबोर हुआ विश्वविद्यालय

भारत की बहुसांस्कृतिक परंपरा को लोकनृत्य तथा लोकसंगीत के माध्यम से बचाए रखने की आवश्यकता है। लोक उत्सव परिक्रमा के अंतर्गत लोक तथा आदिवासी कलाओं को जीवित रखा जा सकता है। उक्त मत कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के उपक्रम के अंतर्गत पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र कोलकाता की ओर से दत्ता मेघे सभागार में आयोजित लोक उत्सव परिक्रमा महोत्सव के उद्घाटन समारोह में किया। समारोह में देशभर से आए 200 से अधिक कलाकारों ने विभिन्न राज्यों की लोकपरंपराओं की प्रस्तुति दी। इन कलाकारों ने विश्वविद्यालय में बिहु, गिद्धा, लावणी, डोगरी, मालवा, कजरी, संथाल, झामुरी, बिरहा आदि लोकगीत तथा संगीत की प्रस्तुति दी।

शिक्षकों के नए प्रकाशन

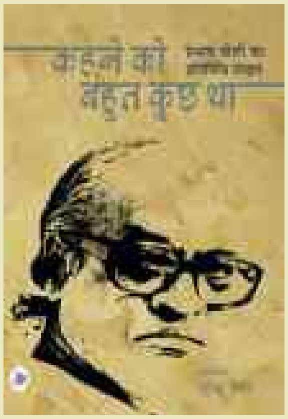

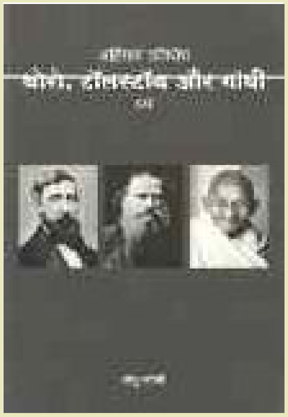

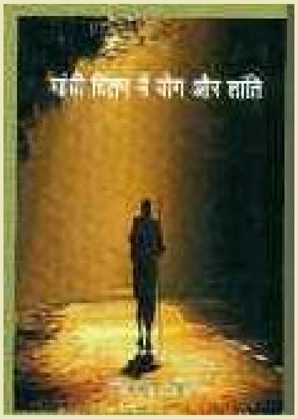

विश्वविद्यालय है वर्धा का गौरव – सांसद रामदास तडस

वर्धा लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के नवनिर्वाचित सांसद रामदास तडस ने हाल ही में विश्वविद्यालय का दौरा कर यहाँ के पाठ्यक्रमों, अकादमिक गतिविधियाँ एवं सामाजिक उपक्रमों की जानकारी प्राप्त की। सांसद के विश्वविद्यालय आगमन पर कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने उनका पुष्पगुच्छ से स्वागत किया तथा विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित पुस्तक वार्ता एवं बहुवचन के नए अंकों की प्रतियाँ भेंट की। कुलपति कक्ष में आयोजित चर्चा के दौरान सांसद तडस ने विश्वविद्यालय के प्रशासनिक कार्य का भी जायजा लिया। कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र, कुलसचिव प्रो. देवराज, वित्ताधिकारी संजय गवई तथा संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. अनिल कुमार राय की उपस्थिति में सांसद तडस ने ज्ञान के विकास में विश्वविद्यालय के योगदान की प्रशंसा की।

विदेशी शिक्षण प्रकोष्ठ को केंद्र की मान्यता

विदेशी शिक्षण प्रकोष्ठ को भाषा विद्यापीठ के अंतर्गत एक स्वतंत्र केंद्र के रूप में स्थापित करने का निर्णय लिया गया है। आठवें और नवें विश्व हिंदी सम्मेलनों में विश्वविद्यालय को इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य सौंपे गए थे। नवें विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित मन्तव्य के अनुरूप विश्वविद्यालय ने विदेशी विश्वविद्यालयों एवं विद्यार्थियों के लिए मानक पाठ्यक्रम तैयार किए। केंद्र के निदेशक प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल दिल्ली विश्वविद्यालय में 24–25 जून तथा 25–27 अगस्त को विदेशी विद्यार्थी एवं विश्वविद्यालय के लिए मानक पाठ्यक्रम हेतु कार्यशालाएँ ली। जिसमें कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र, प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र, अरुण चतुर्वेदी, चतुर्भुज सहाय, डॉ. विमलेशकांति वर्मा, प्रो. अनिल जैन, प्रो. देवेंद्र शुक्ल, प्रो. के.एन. तिवारी, प्रो. रमेश गौतम, प्रो. रमेश ऋषिकल्प उपस्थित हुए। कार्यशाला में पाँच पाठ्यक्रम तैयार कर विदेश मंत्रालय भेजे गए हैं।

यूजीसी वृहद् शोध परियोजना

डॉ. उमेश कुमार सिंह, सहायक प्राध्यापक, साहित्य विभाग, साहित्य विद्यापीठ को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 'प्रवासी साहित्य में अभिव्यक्त पुरानी और नई पीढ़ी के अंत:संघर्ष (सूरीनाम, त्रिनिदाद एण्ड टौबेगो के विशेष संदर्भ में) विषय पर वृहद् शोध परियोजना स्वीकृत की है। डॉ. सिंह विजिटिंग प्रोफेसर हिंदी के पद पर अजरबैजान यूनिवर्सिटी ऑफ लैग्वेजिज में हिंदी अध्यापन कर चुके हैं।

नेट परीक्षा में भारत में अव्वल

विश्वविद्यालय के नाट्यकला एवं फ़िल्म अध्ययन विभाग से एम.ए. सत्र 2012–14 में उत्तीर्ण अभिषेक त्रिपाठी ने यू.जी.सी. द्वारा आयोजित नेट परीक्षा, दिसम्बर 2013 में परफार्मिंग आर्ट्स, डांस, ड्रामा, थियेटर विषय में 74.86 प्रतिशत अंक हासिल कर पूरे भारत में प्रथम स्थान प्राप्त किया और जे.आर.एफ. हासिल की। इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र, प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र, कुलानुशासक प्रो. देवराज, नाट्यकला फ़िल्म अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. सुरेश शर्मा, डॉ. ओमप्रकाश भारती, डॉ. सतीश पावड़े तथा समस्त विश्वविद्यालय परिवार ने उन्हें बधाई तथा भविष्य के लिए शुभकामना दी है।

वर्धा संस्कार प्रकोष्ठ स्थापित

विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों में भारतीय कला एवं संस्कृति के प्रति दिलचस्पी जागृत करने और उनके भीतर कलात्मक अभिरुचि को अभिव्यक्ति देने हेतु वर्धा संस्कार प्रकोष्ठ की स्थापना की गई है। इसके तहत नवंबर माह की प्रत्येक गुरूवार क्रमश: 'रासोमन', 'द पियानिस्ट', 'द चिल्ड्रन ऑफ हेवन', 'एक रुका हुआ फैसला' तथा 'मेघे ढ़ाका तारा' फिल्मों का प्रदर्शन होगा। वैचारिक श्रृंखला के अंतर्गत आवासीय लेखक श्री मदन सोनी 'हिंदी उपन्यास की अल्पता पर कुछ उहापोह' तथा प्रख्यात कलाकार श्री अखिलेश 'हुसेन के घोड़े' पर व्याख्यान देंगे। उक्त आयोजन हबीब तनवीर सभागार में संपन्न होंगे।

विश्वविद्यालय की साख संस्था

कर्मियों के हितों के लिए प्रतिवद्ध

विश्वविद्यालय के समस्त स्थायी शिक्षक एवं शिक्षकेतर कर्मचारियों में मितव्ययता तथा बचत की आदतों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य और 'अपनी सहायता अपने ही द्वारा' के सिद्धांत के आधार पर जमा स्वीकारने एवं ऋण उपलब्ध कराने के लक्ष्य से 'हिंदी विश्वविद्यालय कर्मचारी सहकारी साख संस्था' की स्थापना की एवं महाराष्ट्र राज्य सहकारिता विभाग में 2 जनवरी, 2013 को उसका पंजीयन कराया गया। वर्तमान सदस्य संख्या 129 है। संस्था द्वारा 31, मार्च 2014 तक लगभग 55 लाख रुपये का व्यवसाय किया गया। हर्ष का विषय है कि अपने पहले ही लेखा परीक्षण में संस्था ने 'अ' श्रेणी प्राप्त की। संस्था के संचालक मंडल ने इस उपलब्धि का श्रेय विश्वविद्यालय प्रशासन तथा अपने सदस्यों से प्राप्त सहयोग को दिया है। संस्था द्वारा संचालित विविध प्रकार की सावधि एवं आवर्ती जमा योजनाओं में निवेश कर अधिकतम ब्याज दरों का लाभ सदस्यों से इतर व्यक्ति भी पा सकते हैं। साथ ही, अनेक प्रकार के कल्याणकारी कार्यक्रम भी समय–समय पर आयोजित किए जाते हैं। इसी कड़ी में नवंबर, 2014 के दूसरे सप्ताह में विश्वविद्यालय परिवार के समस्त कर्मियों एवं विद्यार्थियों के लिए चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

डायस्पोरा अध्ययन विभाग के ब्लॉग 'भारतभूमि' का लोकार्पण करते कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र, विभागाध्यक्ष राजीव रंजन राय, डॉ. मुन्नालाल गुप्ता एवं अतिथि सह-आचार्य डॉ. कमल किशोर मिश्र।

हिंदी दिवस समारोह

हिंदी पखवाड़े के समापन पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि भाषा समाज की अस्मिता, पहचान और संकेत के रूप में काम करती है। भाषा वास्तव में एक परफॉर्मन्स है। भाषा आदमी को समर्थ और सशक्त बनाती है। वह युद्ध और शांति का भी काम कर सकती है। हिंदी के विकास के क्रम में हमें चाहिए कि अनुवादी मानसिकता को त्याग कर हिंदी में सोच–विचार को आगे बढ़ाए। इस अवसर पर दैनिक भास्कर, नागपुर के संपादक मणिकांत सोनी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे तथा कुलसचिव प्रो. देवराज, आवासीय लेखक अरूणेश नीरन मंचासीन थे। हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विजयी प्रतिभागियों को कुलपति प्रो गिरीश्वर मिश्र ने नकद राशि तथा प्रमाण–पत्र प्रदान कर पुरस्कृत किया।

हिंदी संसाधन केंद्र स्थापित करने की पहल

प्रजातंत्र की सफलता के लिए समाज की भाषा को समर्थ बनाया जाना आवश्यक है ताकि समझने, निर्णय लेने और काम करने में सुभीता हो। तभी शिक्षा, स्वास्थ्य, कोर्ट कचहरी, सरकारी कार्यालय तथा बाजार आदि के विभिन्न उपक्रमों में भागीदारी बढ़ सकेगी। आज हिंदी में ज्ञान, कौशल और प्रौद्योगिकी स्तरीय संसाधनों और प्रशिक्षण की बेहद कमी है। सरकारी संस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमियों ने विगत वर्षों में हिंदी के लिए कार्य किया है, पर अपेक्षित तालमेल की कमी और संकुचित दृष्टि के कारण सीमित उपलब्धियाँ ही हो सकी हैं। इस महत्वपूर्ण कार्य को पूरा करने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक हिंदी संसाधन केंद्र स्थापित करने की आवश्यकता है जो न केवल हिंदी भाषा–साहित्य के अध्ययन अध्यापन को गुणवत्ता दे, बल्कि हिंदी माध्यम से ज्ञान विज्ञान के विभिन्न अनुशासनों के मानक प्रस्तुत करे। यह हिंदी को उसके माध्यम को उन्नत प्रविधि आदि की दिशा में योजनाबद्ध ढंग से कार्य करे तो अच्छे परिणाम मिल सकते हैं।

कोलकाता केंद्र में भारतीय भाषा दिवस के रूप में मनाया हिंदी दिवस

विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में हिंदी दिवस भारतीय भाषा दिवस के रूप में मनाया गया। हिंदी के सूपरिचित कवि, समालोचक एवं बी.एच.यू. के प्रोफेसर डॉ. सदानंद साही ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने विभिन्न भाषाओं की कविताएँ प्रस्तुत की। कार्यक्रम में प्रो. साही ने कबीर पर विशेष व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि कबीर की कविता हमें आदमकद मनुष्य बनाती है। कबीर बहुमुखी प्रतिभा संपन्न व्यक्ति थे। केंद्र के प्रभारी डॉ. कृपाशंकर चौबे ने स्वागत भाषण किया।

डॉ. मैत्रेयी घोष को फुलब्राइट फैलोशिप

विश्वविद्यालय की पुस्तकालयाध्यक्ष ने फुलब्राइट नेहरू पोस्ट डॉक्टरल फैलोशिप 2013–14 फ्लोरिडा स्टेट यूनिवर्सिटी, अमेरिका से अपना शोध कार्य 'Disaster Risk Management in Libraries and Archives in USA' विषय में पूरा किया। इसके पूर्व डॉ. घोष ने इंडो शास्त्री कॅनडीयन रिसर्च इन्स्टीटयूट, नई दिल्ली द्वारा 'Canadian Studies Faculty Research Fellowship, 2010' के अंतर्गत अपना शोध कार्य 'Archives and e-records Management in Canada' एवं ACRC Research Fellowship, Nanyang Technological University (NTU), Singapore, 2007 में संपन्न किया।

शिक्षा में गुणवत्ता, नवाचार जरूरी - प्रो. आनंद प्रकाश

गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ समिति की तीसरी बैठक को संबोधित करते कुलपति साथ में प्रो. आनंद प्रकाश, प्रो. प्रफुल्ल काले, प्रो. अशोक पावड़े तथा अन्य

गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ समिति की दूसरी बैठक में दिल्ली विश्वविद्यालय के मानोविज्ञान विभाग के प्रो. आनंद प्रकाश ने कहा, अंतरराष्ट्रीय सूचकांक में विश्वविद्यालयों को बेहतर स्थान पाने के लिए आधुनिक शिक्षण–प्रशिक्षण पद्धति तथा देशज ज्ञान के नवाचारी अनुप्रयोगों को अपनाना होगा। मानव संसाधन विकास मंत्रालय एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा उच्चशिक्षा में गुणवत्ता लाने एवं उसे बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) किए जाने वाले मूल्यांकन के तहत विश्वविद्यालय में मार्च 2014 से मूल्यांकन प्रक्रिया चल रही है। इसके तहत परिचालन समिति द्वारा विश्वविद्यालय के समस्त विभागों से सूचनाएँ एकत्र कर 'सेल्फ स्टडी रिपोर्ट' तैयार करके नियत तिथि पर विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर अपलोड कर दी गई। जनवरी या फरवरी के द्वितीय सप्ताह तक मूल्यांकन हेतु समिति के विश्वविद्यालय में आने की संभावना है। विश्वविद्यालय के लिए पूरी तरह से तैयारी में जुटा हुआ है।

नए स्वरूप में विश्वविद्यालय की वेबसाइट

विश्वविद्यालय ने अपनी वेबसाइट को नए रूप में सज्जित किया है। विश्वविद्यालय के सूचना–प्रौद्योगिकी अनुषंग 'लीला' (Laboratory in Informatics For the Liberal Arts) ने इसे आकर्षक रूप दिया है। लीला ने अपनी योजनाओं में भावी अभिकलन (Futuristic computing) को ध्यान में रखकर वेबसाइट से लेकर पाठ्यचर्या निर्माण की गतिविधियों को मुक्त सॉफ्टवेयर पर आधारित किया है।

विश्वविद्यालय बनाएगा भोजपुरी–हिंदी–अंग्रेज़ी शब्दकोश

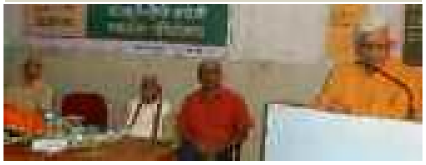

हिंदी विश्वविद्यालय अपनी एक महात्वाकांक्षी योजना के तहत भोजपुरी–हिंदी–अंग्रेज़ी शब्दकोश बनाने की तैयारी कर रहा है। इस पहल के अंतर्गत विश्वविद्यालय के इलाहाबाद केंद्र में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन कर इस योजना को अंतिम रूप दिया गया। कार्यशाला का उद्घाटन कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने किया तथा अध्यक्षता आवासीय लेखक प्रो. अरुणेश नीरन ने की। कार्यशाला में प्रो. ए.ए. खातमी, प्रो. अकील रिज़वी, नंदन हितैशी, स्वामी सतीश अग्रवाल, असरार गांधी, प्रवीण शेखर, सुश्री नीलमशंकर, फखरूल करीम, अशफाक हुसैन, रतिनाथ योगेश्वर, सुरेन्द्र राही, सालेहा जरीन, विधु खरे दास, यशराज सिंह पाल आदि उपस्थित थे। कार्यशाला का संचालन केंद्र प्रभारी प्रो. संतोष भदौरिया ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अमरेंद्र कुमार शर्मा ने किया।

विश्वविद्यालय की महत्वपूर्ण वेबसाइट एवं ब्लॉग

www.hindivishwa.org
www.hindisamay.com
www.mediasamay.com
www.blogsamay.com
www.hindipremi.blogspot.com
www.nirvachan.blogspot.com
www.ccmswardha.wordpress.com
www.ullaasmgahv.blogspot.in
www.bharatbhoomi.blogspot.com

विश्वविद्यालय में प्रतिकुलपति एवं आवासीय लेखकों की नियुक्ति

प्रो. चित्तरंजन मिश्र
विश्वविद्यालय में प्रतिकुलपति के पद पर नियुक्त हुए है जो पिछले तीस वर्षों से दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में कार्यरत रहे हैं। उन्होंने 'निर्गुण भक्त कवियों द्वारा उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत रामकथा' विषय पर पीएच.डी. उपाधि प्राप्त की। मध्यकालीन काव्य, समकालीन साहित्य, लोकसाहित्य एवं भोजपुरी साहित्य इनके अध्ययन के प्रमुख क्षेत्र रहे। प्रो. मिश्र हिंदी भाषा एवं भारतीय संस्कृति के संवर्धन के लिए लगातार सक्रिय रहे हैं। साहित्यिक सेवाओं के लिए उन्हें भगवत शरण उपाध्याय आलोचना सम्मान, प्रेस्टिज सारस्वत सम्मान, साहित्य सेवी सम्मान आदि से नवाजा जा चुका है।

प्रो. वागीश शुक्ल
को विश्वविद्यालय में आवासीय लेखक के रूप में नियुक्त किया गया है। वे इस विश्वविद्यालय के पहले प्रोफेसर रहे है इन्हें विश्वविद्यालय की कार्यपरिषद द्वारा फरवरी–जुलाई 1999 में नियुक्त किया गया था। उन्होंने प्रथम कुलपति अशोक वाजपेयी के निर्देशन में विश्वविद्यालय को अकादमिक दृष्टि प्रदान करने में महती भूमिका निभाई। उनके महत्वपूर्ण प्रकाशनों में 'छंद छंद पर कुंकुम' तथा 'उर्दू का देवनागरीकरण' शामिल है। वागीश शुक्ल को विशिष्ट अकादमिक योगदान एवं प्रकाशन के लिए विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया है।

डॉ. अरुणेश नीरन
विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं से संबद्ध रहे आवासीय लेखक श्री अरूणेश नीरन की रचनाओं में भोजपुरी वैभव, पुरइनपात, शिव प्रसाद सिंह, हमार गाँव, अक्षर पुरूष आदि शामिल है। उन्होंने नेशनल बुक ट्रस्ट के लिए प्रतिनिधि भोजपुरी कहानियाँ और केंद्रीय हिंदी संस्थान के लिए अज्ञेय शती स्मरण का संपादन किया है। वे विश्व भोजपुरी सम्मेलन के राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय महासचिव पद पर निर्विरोध निर्वाचित होकर लगातार अपने दायित्वों का निर्वहन करते आ रहे हैं।

श्री मदन सोनी
हिंदी के चर्चित लेखक तथा विश्वविद्यालय में नियुक्त आवासीय लेखक की प्रकाशित पुस्तकों में 'कविता का व्योम और व्योम की कविता', विषयांतर, कथा पुरूष, उत्प्रेक्षा आदि शामिल हैं। वे पूर्वाग्रह, समरहिल, समास, समकालीन भारतीय साहित्य, बहुवचन, हिंदी, वसुधा, कथादेश, साक्षात्कार, दस्तावेज, प्रतिलिपि आदि प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में लिखते रहे हैं। उन्होंने अंग्रेजी से हिंदी और बुंदेली भाषा में अनुवाद कार्य किया हैं। उन्होंने हिंदी की चर्चित पत्रिका पूर्वाग्रह तथा साहित्य कला एवं कल्पनाओं समर्पित पत्रिका समास का संपादन भी किया है।

नवनियुक्त अधिष्ठाता प्रो. अरविंद कुमार झा

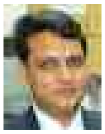

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता के रूप में वहाँ पर शिक्षा विभाग की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा चुके प्रो. अरविंद कुमार झा को विश्वविद्यालय के शिक्षा विद्यापीठ में प्रोफेसर नियुक्त किया गया। प्रो. झा ने दिल्ली विश्वविद्यालय के केंद्रीय शिक्षा संस्थान से शिक्षक–शिक्षा सहित पी. एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने अध्यापन का कार्य दिल्ली विश्वविद्यालय से प्रारम्भ किया एवं शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा में रचनावाद, भारतीय दर्शन और ज्ञानमीमांसा जैसे विषयक्षेत्र पर पुस्तकें भी लिखीं हैं।

नवनियुक्त शिक्षक व चिकित्सक

पूर्व से संचालित विभागों/केंद्रों तथा नए विभागों के अध्ययन अध्यापन को और अधिक सुचारू बनाने के उद्देश्य से पिछले दिनों विश्वविद्यालय में लगभग 45 शिक्षकों को नियुक्त किया गया है। साथ ही विद्यार्थियों एवं विश्वविद्यालय परिवार के अन्य सदस्यों के स्वास्थ्य समस्याओं के निदान हेतु पुरूष एवं महिला चिकित्सक को नियुक्त किया गया है, जिनके सहयोग हेतु एक नर्स की भी नियुक्ति की गई है।

आचार्य द्विवेदी साहित्य के साधक ही नहीं बल्कि समाज वैज्ञानिक भी थे - प्रो. मिश्र

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी साहित्य के साधक ही नहीं बल्कि समाज वैज्ञानिक भी थे, साहित्य के अतिरिक्त ज्ञान के अन्य अनुशासनों जैसे पुरातत्व, इतिहास, दर्शनशास्त्र, राजनीतिशास्त्र और अर्थशास्त्र पर भी द्विवेदी जी ने सरस्वती के मार्फत चिंतन किया। द्विवेदी जी बहुभाषाविद् थे उन्हें हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत, उर्दू, बंगला का भी अच्छा ज्ञान था। उक्त विचार कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने 'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण के सवाल' पर आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी में व्यक्त किए। इसका आयोजन म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा एवं महादेवी वर्मा सृजनपीठ, कुमाऊँ विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। संगोष्ठी में प्रो. एच. धामी, गोपेश्वर सिंह, श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी, प्रो. सूरज पालीवाल, प्रो. देवसिंह पोखरिया, डॉ. शंशाक दुबे, डॉ. साधना अग्रवाल, डॉ. रीता तिवारी एवं डॉ. शोभा पालीवाल आदि सम्मिलित हुए।

वार्षिक व्याख्यानमाला

विश्वविद्यालय में देश–विदेश के महान चिंतकों के विचारों पर केंद्रित वार्षिक व्याख्यानमाला का आयोजन किया जाना तय हुआ है। इस आयोजन के प्रथम चरण में महात्मा गांधी, बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर, डॉ. राम मनोहर लोहिया, महर्षि अरविंद, स्वामी विवेकानंद तथा विनोबा भावे के विचारों पर केंद्रित वार्षिक व्याख्यानमाला का आयोजन किए जाने हेतु कुलपति की अध्यक्षता में आयोजन समिति का गठन किया गया है। इस समिति में सदस्य के रूप में समस्त विद्यापीठों के संकायाध्यक्ष तथा आयोजन सचिव अकादमिक संयोजक को बनाया गया है।

नवाचार क्लब गठित

विश्वविद्यालय में कक्षा शिक्षण, अध्ययन एवं शोध के क्षेत्र में नवीन पद्धतियों की खोज और उनके कार्यान्वयन के उद्देश्य से विश्वविद्यालय नवाचार क्लब स्थापित किया गया है, जिसका संयोजक, अनुवाद प्रौद्योगिकी विभाग के अध्यक्ष प्रो. देवराज को बनाया गया है। डॉ. रवि कुमार व अनुपमा कुमारी ने राष्ट्रपति भवन में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।

नए विद्यापीठ एवं विभागों में पाठ्यक्रम प्रारंभ

विश्वविद्यालय ने वर्तमान सत्र से अपने अकादमिक गतिविधियों का विस्तार करते हुए नए विद्यापीठ एवं विभागों को स्थापित किया है, जिसमें पाठ्यक्रमों का संचालन प्रारंभ हो गया है। नव स्थापित शिक्षा विद्यापीठ में एम.ए. शिक्षा शास्त्र का पाठ्यक्रम तथा मनोविज्ञान विभाग में एम.फिल. स्तरीय पाठ्यक्रम का अध्ययन अध्यापन एवं शोध कार्य शुरू किया जा चुका है। साथ ही, पीएच.डी. माइग्रेशन, डायस्पोरा एवं ट्रांसनेशनल स्टडीज, तुलनात्मक साहित्य में एम.ए. एवं एम.फिल. स्तरीय पाठ्यक्रम भी इस सत्र से प्रारंभ किए गए हैं।

कन्याकुमारी का शैक्षिक भ्रमण

महात्मा गांधी फ्युजी गुरुजी शांति अध्ययन केंद्र के अंतर्गत 15 अक्टूबर से 22 अक्टूबर तक प्रौद्योगिकी संसाधन केंद्र विवेकानंद केंद्र, कन्याकुमारी संस्थान का शैक्षिक भ्रमण किया गया। विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र द्वारा हरी झंडी दिखाकर इस शैक्षिक भ्रमण को रवाना किया गया। केंद्र के निदेशक प्रो. मनोज कुमार के नेतृत्व में केंद्र के 39 सदस्यों ने इस शैक्षिक भ्रमण में भागीदारी की। इस अवसर पर संकायाध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार राय, डॉ. श्रीरमण मिश्र, डॉ. शंभू जोशी, डॉ. अमित कुमार विश्वास, डॉ. रामगोपाल मीणा आदि उपस्थित थे।